सं श्रो वि०/एफ बी०/7-86/15175 -- चुकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं पलबल कोपरेटिव शूगर मिल लिं पलबल, के श्रमिक श्री धर्म चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यीयनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का श्रेयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधसूचना सं 11495 जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के श्रिधीन गटित श्रम न्यायालय, फरीदांबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संवन्धित मामला है:—

वया श्री धर्म चन्द, पुत्र की संवाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है।

सं श्रो वि । पानी | 37-86 | 15181 - पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वजाज इण्डस्ट्रीज, इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, करनाल, के श्रमिक श्री बलवीर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है,

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1985 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधोन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बलवीर सिंह, पुत्र श्री राम धारी की सेवाश्रों का समापन व्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री वि । वि । वि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं जिय सन्ज मैटल इण्डस्ट्रीज, जगाधरीं, के श्रमिक श्री धर्मपाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

इसलिए, अब मौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 3(.44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1985 द्वारा अनत ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निर्देश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री धर्मपाल, पुत्र श्री मेहर सिंह की सेवाशों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

. संब्धोविष /एफ.डी./15322. चूंकि इरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं विपको आटो मैटल, 2-कै/44 बीपी. एन.आई.टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री हरि नाथ तथा इसके प्रबद्धकों के मध्य इसमें इसके बाद ज़िखित मामले में कोई भीकोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय्निणय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, शब, श्रीशोनिक विवाद श्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिन्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-भम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़तें हुये. प्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिशांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अस न्यायालय, फरीदाबाद, को दिवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायालयं एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्विष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रथम्धकों तथा श्रीमक्ष के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रयास सम्बन्धित मामला है:—

निया श्री हरिनाथ, पुत्रश्री नवल की सैवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं; तो बहु - किस राहत का इकदार है ?